शिवना नदी में आज भी मौजूद है सतियों के चबुतरे

इस नरसंहार के बाद उसने नगर में प्रवेश किया तथा कई कुमारिकाओं, महिलाओं एवं बालकों को भी तलवार के घाट उतार दिया। कई महिलाएं अपने पतियों के शिरों को गोद में लेकर उनके साथ ही चिता में बैठकर सती हो गई। इन सतियों के चबूतरे आज भी शिवना नदी में विद्यमान हैं। कहते हैं उस समय इतने लोग मारे गये कि उनकी जनेऊ का भार साढ़े 74 मन था। आज भी दशोरे इस 74 की आन को मानते हैं। इस प्रकार इन ब्राह्मणों का समूल नाश कर वह दशपुर में घुसा जहां उसने स्त्रियों एवं बच्चों पर जुल्म किये, सम्पत्ति को लूटा एवं अपनी इच्छाओं को पूरी कर आगे बढ़ा। इस कत्लेआम में उसने ब्राह्मणों को ही मारा एवं अन्य जातियों को जिसमें महाजन, घांची, मोची, तेली कुम्हार आदि थे उनको छोड़ दिया गया। जो लोग इस नर संहार से बच गये थे उन्होंने इन शवों का दाह संस्कार किया तथा मंदिरों में बची हुई अन्य मूर्तियों को भी जल में प्रवाहित कर दिया। शवों के दाह संस्कार के समय जो स्त्रियां सती हुई थीं उन्होंने शाप दिया कि कोई भी दशोरा इस दुर्ग में वास नहीं करेगा तथा शिवना नदी का जल नहीं पीयेगा।

(ब) मन्दसौर से पलायन- इसके बाद ये बचे हुए परिवार स्त्रियों एवं बच्चों को लेकर तथा आवश्यक वस्तुओं को बेलगाड़ियों में रखकर अपने पूर्वजों की भूमि को अंतिम प्रणाम करके अनजानी मंजिल की ओर चल पड़े। जाते समय इस नगर की मिट्टी को अपने मस्तक पर लगाया और प्रतिज्ञा की कि, ''जिस धरती पर हमारे हजारों भाईयों का रक्त गिरा है तथा जिस रक्त से शिवना नदी का जल लाल हुआ है हम प्रतिज्ञा करते हैं कि इस धरती के हम पुनः दर्शन नहीं करेंगे, और शिवना नदी का जल नहीं पीयेंगे। हमें साढ़े 74 की आन है।''

दशपुर में बची हुई सभी जातियों के लोग इस समय 1400 बैल गाड़ियों को लेकर इससे चारों दिशाओं की ओर रवाना हुए। जिनमें 350 मेवाड़ की ओर, 350 उत्तर प्रदेश की ओर, 350 मालवा, चित्तौड़ की ओर तथा 350 गुजरात की ओर चल पड़ी। इन जातियों में महाजन तेली, कुम्हार आदि सभी जाति के लोग थे जो दशपुर से जाने के कारण अपने आपको 'दशोरा' ही कहने लगे। विभिन्न दिशाओं में जाने वाले व्यक्ति आज भी दशपुर में की गई अपनी प्रतिज्ञा का पालन कर रहे हैं। इनमें जो समुदाय दक्षिण की ओर गया वह नर्मदा पार जाकर बस गया। ये वास्तव में दशोरा ब्राह्मण ही थे जो व्यापार का कार्य करते थे इस कारण अपने को महाजन कहने लगे थे तथा इसी कारण से इनको कत्लेआम में छोड़ दिया गया था। ये लोग आज भी काफी संख्या में निमाड़ और मालवा में विद्यमान हैं। ये अपने आपको अब तक दशोरा ब्राह्मणों से भिन्न ही मानते रहे जबकि ये दोनों एक ही जाति एवं वंश के हैं। इन दोनों के कुल, गोत्र, अवंटक प्रवर आदि में पूर्ण समानता है। जो समुदाय मेवाड़ में पहुंचा उस समय वहां रावल रतनसिंह का चित्तौड़ शासन था। ये लोग इन्हीं की शरण में आये तथा यहीं बस गये।

क्रमशः

।। श्री गणेशाय नमः ।।

विजय स्टील डेकोर

35, धनवन्तरी नगर, जी-1, राजसुधा अपार्टमेन्ट, दधिची चौराहा, इन्दौर फोन 2321578, मो. 98268-32786, 98936-24291

।। श्री सांई नमामि नमः ।।

फाइबर शीट मनभावन रंग एवं डिजाईन्स में रेडी स्टॉक में उपलब्ध
घर में बाल्कनी एवं सीढ़ीयों में उपयोग होने वाली
Railing Stair Case/Casting/Wrought Iron/Stainless Steel, Brass Exclusive
G.P. Fitting "Spring", Sanitary Fitting Gold Line. C.P.
की सम्पूर्ण श्रृंखला व सभी कम्पनियों के.जी.आई.पाइप के विक्रेता
सभी प्रकार के हार्डवेयर का सामान इन्दौर शहर के मूल्य पर
आपकी कालोनी में उपलब्ध
R.K. Dave (Pappu)